ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 104-106
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

भारतीय संस्कृति में श्रृंगार की महत्ता – स्त्री, पुरुष व साधुओं से विशेष सन्दर्भ में

1. डॉ0 आलोक भावसार
2. सिद्धार्थ त्रिपाठी

1. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष– चित्रकला विभाग, शोध अध्येता– शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म0प्र0), भारत

Received-20.04.2023, Revised-27.04.2023, Accepted-30.04.2023 E-mail: wadhwavinny2@gmail.com

सारांशः ***श्रृंगार शब्द का उद्भव होते ही हमारे मन मस्तिष्क में किसी सुंदर भारतीय नारी की छवि उभर आती है,उसका सामान्यतः कारण है। हमारे आस पास का साहित्य और हमारा सौंदर्य बोध आमतौर पर हिंदी साहित्य में श्रृंगार को स्त्रियों का गहना कहा गया है, जिसको पहनने से उसका रूप और भी आकर्षक लगने लगता है और उनकी सुंदरता में चार चाँद लग जाते हैं। हिंदी साहित्य के कवियों ने श्रृंगार के दोनों रूपों संयोग और वियोग, में असंख्य कवितायें लिखी हैं। जिनमें स्त्री के विभिन्न अंगो एवम् उपांगो का अत्यंत सूक्ष्मता से वर्णन किया है। इतना ही नहीं प्रकृति को नायक या नायिका का रूपक देकर सर्वोत्तम साहित्य की रचना की है।***

कुंजीभूत शब्द– सौंदर्य बोध, हिंदी साहित्य, आकर्षक, सुंदरता, श्रृंगार,सर्वोत्तम साहित्य, संयोग और वियोग, विहंगम इतिहास।

श्रृंगार जिसे अलंकरण भी कहा जाता है, यह अपनेआप में मानव सभ्यता के विकास क्रम का एक विहंगम इतिहास धारण किए हुए है। एक ऐसा इतिहास जिसनेमानव के विभिन्न रूपों को देखा है, अनगिनत कहानियों का चस्मदीद गवाह रहा है। मानव के विकास क्रम में श्रृंगार ने जहां वीभत्स रूप मेंमार–काट, युद्ध, अशांति सेरंजित किया होगा, साम्राज्यों का पतन, जनता के दुःख, नरसंहार, अकाल, महामारी, उपनिवेशवाद, नस्लवाद, सांप्रदायिक तनाव के बीच रक्तरंजित इतिहास को जन्म दिया होगा। वहीं दूसरी ओर साम्राज्यों के उत्थान, ज्ञान, कला, संस्कृति, खुशहाली, मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण साहित्य एवं शांति के बीच रंग बिरंगें रंगों से रंजित किया होगा। अन्य शब्दों में कहा जाए, तो श्रृंगार ने मानव की उत्पत्ति के समय से ही उसके उत्थान एवं पतन को विभिन्न रंगों से मानव के विभिन्न आयामों एवं क्षेत्रों को रंजित किया होगा ।

श्रृंगार की पृष्ठभूमि– मानव इतिहास में श्रृंगार ने विभिन्न कला एवं संस्कृतियों को जन्म दिया है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर अत्याधुनिक काल तक कला के विभिन्न रूप देखने को मिले किन्तु उनके अपने–अपने भाव थे, अपने दृष्टिकोण से दुनिया को देखने का नजरिया था। मानव की कलाकारी की छाप पत्थरों से लेकर, ताड़पत्र, ताम्रपत्र, भित्तिचित्र, कै नवास, कागज और डिजिटल स्क्रीन तक आ गई, कला में श्रृंगार की यह अनंत यात्रा अभी भी जारी है। जहां इंसान अपने भावों की कूची से विचारों को रंगता है।

कहना दिलचस्प होगा कि हमने अपनी विकास यात्रा में श्रृंगार को जो नए आयाम दिए है, उससे इस पृथ्वी पर मनुष्य की अखण्ड प्रभुसत्ता का दिगदर्शन होता है। मानव ने अपने मस्तिष्क को इस हद तक विकसित कर लिया कि यह समस्त सचराचर पर विजय प्राप्त करते हुए, प्रकृति की श्रेष्ठ कृति बनकर उभरा है।

पशुवत जीवन को त्यागकर, इंसान की इंसान बनने की एक लम्बी कहानी है, स्थाई बसेरा बनाकर मानव ने जहां प्रकृति के एक क्षेत्र विशेष पर घर बनाकर, उनकी भित्ति को फूलों, पत्तियों, शाखाओं, नदियों, पहाड़ों, जीवजंतुओं के चित्र बनाकर दीवारों को चित्रित किया। मानव ने ये भित्तिचित्र को रापन मिटाने के उद्देश्य से किया होगा, ऐसी सम्भावना है। कोरापन पशुवत होने की निशानी है, जहां कोई आस्था नहीं, विचार नहीं, आवेग नहीं, भावनाएँ नहीं, उद्दीपन नहीं मानव ने अपने इन भावों से न केवल भित्ति बल्कि स्वयं को रंग लिया। मानव द्वारा स्वयं को रंगना यह उसके विश्वास/आस्था को भी दर्शाता है और सुंदरता को बढ़ाने के लिए अलंकार के रूप में प्रयोग करता है। सम्भवतः यही से मानव के श्रृंगार की कहानी प्रारम्भ होती है।

मानव जीवन में श्रृंगार के अनेक रूप– श्रीमदभागवतमहापुराण के द्वादश स्कन्द के द्वादश अध्याय में श्लोक क्रमांक ४६ पर कहा गया है कि –

तदेव रम्यरुचिरम्नव नव तदेव शश्वन्मनसो महोत्सवम्।
तदेव शोकार्णवशोषणम्नृणाम्यदत्तुमश्लोकयशोअनुगीयते।।

अर्थात श्रृंगार के वल शारीरिक सुंदरता को व्यक्त नहीं करता बल्कि यह मन की सुंदर को भी उतनी ही खूबसूरती से व्याख्यायित करता है। इस श्रृंगार में आस्था का समावेश होता है, फिर चाहे वह शृंगार कोई भी करे, शृंगार जहाँ स्त्री के लिए गहना है, वहीं दूसरी ओर उसकी भावनाएँ, उसकी आस्था, उसकी सकारात्मक ऊर्जा या अस्मिता जुड़ी होती है।

१६ श्रृंगार के अलंकरण, एक नवविवाहित स्त्री अपने शरीर पर अलग–अलग अंगों में धारण करती है। नख से लेकर शिख तक १६ प्रकार के सोने व चाँदी के आभूषणों को भारतीय परंपरा में महिलाओं द्वारा पहना जाता है। लेकिन आजकल महिलाएं डायमंड और आर्टिफिशियल आभूषणों का उपयोग भी करती हैं। भारत में पुराने समय से १६ श्रृंगार को सुहागन, रानी–महारानियों द्वारा अपने सौंदर्य को निखारने के लिए प्रयोग में लाया जाता था। आज भी भारतीय महिलाएं इन सोलह श्रृंगार को त्योहारों या शादियों के अवसर पर जरूर करती हैं। ऐसा माना जाता है कि आभूषणों को जब महिलाएं अपनेशरीर के विभिन्न अंगों में धारण करती हैंतो यह श्रृंगार महिलाओं के सौन्दर्यके साथ –साथ विभिन्न दोषों को भी दरू करता है। विभिन्न आभूषणों को धारण करनेसेमहिलाओं के पति की आयु में वृद्धि होती है साथ ही महिलाओं के सौभाग्य में वृद्धि होती है और यह महिलाओं के सभी प्रकार के दोषों को भी दूर करता है और उनके जीवन में सम्पन्नता लेकर आता है। सोलह श्रृंगार में प्रयुक्त आभूषणों का अपना विशेष महत्त्व है।

स्त्रियों का श्रृंगार– भारतीय समाज ने स्त्रियों के सोलह श्रृंगारों और बत्तीस आभूषणों की अवधारणा को सबसे पहले कब

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

आत्मसात किया यह ठीक–ठीक ज्ञात नहीं है। सौभाग्य से १३ वीं या १४ वीं शताब्दी के संस्कृत कि वल्लभदेव की 'सुभाषितावली' के एक श्लोक मेंसोलह श्रृंगारों की सूची दी गई है, जो अब तक उपलब्ध प्राचीनतम उल्लेख है। बत्तीस आभूषणों की बात करें तो प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में स्त्री–पुरुषों द्वारा धारण किए जाने वाले आभूषणों और अलंकारों के नामों की तो भरमार है लेकिन बत्तीस आभूषणों की कोई मान्य सूची प्राप्त नहीं हो सकी है। सोलह श्रृंगारों के संबंध में वल्लभदेव का श्लोक यह है

आदौ मज्जन चीर हार तिलकं नेत्रांजनंकुण्डलेनासा
मौक्तिक केशपाशरचना सत्कंचुकं नूपुरौ।
सौगन्ध्यंकर कं कणंचरणयो रागो रणन्मेखला
ताम्बूलंकरदर्पणंचतुरता शृंगारकाः षोडषाः।।

इस श्लोक के अनुसार सोलह श्रृंगार इस प्रकार हैं– मज्जन (स्नान), चीर (अधोवस्त्र), हार, तिलक, आँखों में काजल, कुण्डल, नासा–मुक्ता (नाक में मुक्ता की कील), केश विन्यास, कंचुक, नूपुर, अंगराग (सुगंध), कंकण, चरणराग, करधनी, तांबूल (पान) और करदर्पण (आरसी)। देश काल की विभन्नता और स्थानीय रिवाजों के कारण सोलह श्रृंगारों की सूची में कुछ हेरफेर होना स्वाभाविक था। १६ वीं सदी में ही अधररंग (लिपस्टिक) का चलन हो गया था इसलिए मलिक मुहम्मद जायसी नेजब सोलह श्रृंगार गिनाए तो उन्होंने अधर रंग भी जोड़ दिया, साथ में सिन्दूर और पायल का भी उल्लेख कर दिया। जायसी की सूची यह है – १. मज्जन, २. स्नान, ३. वस्त्र, ४. पत्रावली, ५. सिन्दूर, ६. तिलक, ७. कुण्डल, ८. अंजन, ९. अधरों को रंगना, १०. तांबूल, ११. कुसुमगंध, १२. कपोलों पर तिलक, १३. हार, १४. कं चुकी, १५. क्षुद्रक्षुघंटिका और १६. पायल। जायसी ने मज्जन और स्नान को अलग–अलग माना तथा कर कंकण का उल्लेख नहीं किया।

पुरुषों का श्रृंगार – भारतीय समाज में पुरूष का श्रृंगार उतना ही पुराना है, जितना कि एक स्त्री का। भारतीय परिवेश में पुरुष का सिंगार उसके जन्म से ही शुरू हो जाता है। उसकी बाल्यावस्था में माता–पिता बच्चे (बालक) का नाना प्रकार से श्रृंगार करके उसके बाद वात्सल्य का रसपान करते हैं। उसे दुलारते हैं। उसे नजर से बचाने के लिए सजने सवारने के लिए जूड़ा, काजल, डिठोना, पायल, पैबंद, हेम्लाएं, मालाएं, तावीज, घुँघरू, कडेबांधते हैं। इस श्रृंगार का जीवंत उदाहरण तुलसी, रसखान, सूरदास आदि भक्तिकालीन कविओं द्वारा प्रमुखता से किया गया है।

प्राचीन वेदों, पुराणों, उपिनषदों में विभिन्न देवों के स्वरूप का पुरूष रूप में वर्णन किया है। वह अद्भुत है। इस श्रृंगार को न के वल भाववाचक अपितु पदार्थवाचक संज्ञाओं से सुसज्जित किया गया है। पुरूष के सौन्दर्य को वीरता और साहस से जोड़कर उसमें नए–नए अलंकार का समावेश अत्यंत ही चतुराई से किया है। संस्कृत साहित्यों में स्त्री पुरुष दोनों के सौन्दर्य को पर्याप्त स्थान है। कालिदास ने अपने कालजयी ग्रन्थ विक्रमोर्वशीय में बड़ी ही सुंदरता से पुरुष श्रंगार का वर्णन किया है। नल दमयंती कथा में जितनी सुन्दर दमयन्ती है उतने ही सुन्दर नल भी है। कोई किसी से कम या अधिक नहीं हैं। इसके अतिरिक्त राम और कृष्ण के सौंदर्य वर्णन से हिन्दी साहित्य भी भरा हुआ है। कृष्ण का सौन्दर्यवर्णन करने वालों में मीराबाई भी शामिल है

नागा साधुओं में श्रृंगार– सनातन संस्कृति में साधुओं (अर्थात्नागा साधु) का श्रृंगार अपने आप में अद्वितीय है। महिलाएँ जहां अपने रति–प्रेम में श्रृंगार के १६ श्रृंगारों को धारण करती हैं। वहीं साधु १७ श्रृंगार से अपने आप को सुसज्जित करते हैं। यह १७ श्रृंगार

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

साधु को अपने आराध्य के लिए समर्पित करते हैं, जिसकी भक्ति के लिए वह अपने आपको समर्पित कर देता है। साधु का श्रृंगार अपने इष्ट को उसी प्रकार प्रभावित कर देता है, जिस प्रकार श्रृंगारित रूप लावण्य स्त्री को देखकर उसका पति मोहित हो जाता है। यह कहना दिलचस्प होगा कि नागा साधुका जीवन रति, काम, सम्मोहन, चिताकर्षण से निरेपरे है। वह घनघोर तप एवं साधना करते हुए, अपने इष्ट को रिझाता है। ऐसी साधना शायद ही नागा साधुओं के अलावा कोई कर सकता हो।

नागा साधुओं में शिव को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, हालांकि शिव बाघंबर लपेटते है। फिर भी शिव अपने शरीर का श्रृंगार भभूत से करते हैं। भूतों के नाथ भूतनाथ महादेव की भभूत की महिमा इतनी निराली है कि यह के वल बाघ की खाल को सजीवता प्रदान कर देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि कुम्भ मेले में नागा साधुओं में सबसे अधिक आकर्षण केंद्र होती है, उनकी भभूति। यह उन्हें एक अलौकिक शक्ति से जोड़ती है। इसकी महत्ता का कोई शानी नहीं है, जिसका वर्णन शब्दों में कर पाना लगभग असंभव ही है। नागा साधु जब भभूत लगाते हैं, तो आश्चर्यजनकध्रहस्यमयी नजर आने लगते हैं। नागा साधुओं द्वारा लगाई जानेवाली भभूत कोई साधारण भभूत नहीं होती, अपितु यह विशेष रूप से तैयार की जाती है, इसके लिए अकौआ, चन्दन, आंवला की लकड़ियां जलाकर तैयार की जाती है। इसमें चन्दन मिलाकर गाय के उपलों पर जलाया जाता है। कुछ नागा साधु उसके लड्डू बनाकर अग्नि में भस्म करके राख को छानकर, कच्चे दूध से मिलाकर अपने शरीर पर मलते है।

नागा साधु १७ प्रकार का श्रृंगार करके कुंभ मेले में शिरकत करते हैं तो उस समय कि छट देखते ही बनती है। उनकी शोभयात्रा ऐसी लगती है मानो शिव–सेना अपने पूरे लाव–लश्कर के साथ किसी विशेष अभियान पर निकली हो। अखाडो के जयघोष गगन को गुन्जायमान कर देते हैं। वातावरण में जो भव्यता आती है। वह अवर्णनीय है। नागा साधु १७ प्रकार के श्रृंगार में मुख्य रूप से अग्रलिखित अलंकरण धारण करते हैं। (१) लंगोट (२) भभूत (३) शरीर पर विभूति का लेप (४) चंदन (५) पैरों में लोहेया चांदी का कड़ा (६) अंगूठी (७) पंचकेश (८) कमर पर माला (९) माथे पर रोली का लेप (१०) कुंडल (११) हाथों मेंचिमटा (१२) डमरू (१३) कमंडल (१४) तिलक (१५) काजल (१६) अलग तरह से गुंथी हुई जटाएं (१७) हाथों में कड़ा और बांहों पर रुद्राक्ष की मालाएं लिपटी होती है।

ये पूरे १७ श्रृंगार है, जो हर नागा साधु दीक्षा लेने के बाद धारण करता है। शाही स्नान से पहले ये पूरी तरह से सजधज में आकर ही स्नान करते हैं, वरना स्नान अधूरा माना जाता है. नागा साधुओं के श्रंगार में "भभूति" शारीरिक और मानिसक शांति प्रदान करनेवाली प्रसिद्ध औषिध का काम करती है। इसके सेवन से कई असाध्य रोगों से राहत मिलती है। यही नहीं भगवान शंकर अपनेपूरेशरीर पर भस्म लगाते थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार इससे वे इस बात का संके त देते थे कि येसृष्टि नश्वर है या कहलें मृत्युकारक हैजो इस संसार मेंआया है उसने एक न एक दिन राख बन धरती में ही समा जाना है।

उपसंहार– भारत में कलाओं का अपार भंडार है और आज भी समग्र विश्व भारतीय कला समृद्धि की औत्सुक्य ही नहीं, अपितु लोलुप भाव सेदेख रहा है। भारत में कला एवं दर्शन का अद्भुत समन्वय है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। परम तत्व को सर्वस्व मानने वाला या मानकर चलने वाला यह महान भारत देश उसी में सब शक्तिमत्ता सौंदर्य आकर्षण अथवा आनंद खोजता है। स्पष्ट है कि भारतीय बुद्धि रूप को भेदकर आंतरिक सौंदर्य की खोज में रहती है। सौंदर्यबोध में शास्त्रीय और व्यक्तिगत दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक एवं परिहार्य है। शास्त्रीय दृष्टिकोण सौंदर्य के ऐसे तत्व को परिभाषित करता है जिससे सकल लोक का रंजन होता है किं तुजब व्यक्तिगत दृष्टिकोण सेधूप आयत को देखते हैं, तब और आदर्शों की कल्पना करते हैं जो आकर्षण का केंद्र होती हैं। भाव श्रवण मानव के रिसक ह्रदय को सौंदर्यमोहता है और आपने संतुष्टि की अनुभूति दिलाता है। यही आनंदमयी रस की अनुभूति सुख प्रदान करती है। सभी कलाओं में सज्जा श्रृंगार मानवीय भावों को अनुगुंजित करता है। इन सब में सनातन संस्कृति में साधुओं (अर्थात्नागा साधु) का श्रृंगार अपने आपमें अद्वितीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अक्षय वट, शीतला प्रसाद मिश्र, कल्याण मंदिर प्रकाशन, प्रयाग, १९९२.
2. नारी श्रृंगार, हर्षनंदनी भाटिया, प्रभात प्रकाशन,
3. नागा सन्यासियों की दुनिया, शरद द्विवेदी, साहित्य भंडार इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, २०१६.
4. भारतीय चित्रकला में नारी अंकन, डॉ. दिनेश चंद्र गुप्त, धर्माप्रकाशन, इलाहाबाद, २००३.
5. करपूरमंजरी, राज शेखर, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, १९७३.
6. श्रृंगारपरिशीलन, आचार्य चण्डिका प्रसाद शुक्ल, हिंदुस्तानी ऐके डमी, इलाहाबाद, १९७१.

*****